❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण प्रकल्प

वेद परिवार निर्माण अभियान
50 मंत्र - 1 परिवार
वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान में भाग लेने हेतु
9810936570 या 9911140756 पर व्हाट्सएप्प करें

वर्ष 48, अंक 30 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 मई, 2025 से रविवार 25 मई, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अन्तर्गत आर्यवीर - वीरांगनाओं के देशव्यापी शिविरों के आयोजन में बच्चों को अवश्य भेजें आर्यजन

युवा शक्ति के सर्वांगीण विकास का स्वर्णिम अवसर, ग्रीष्मकालीन चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज एक विश्वव्यापी आंदोलनकारी संगठन है। इसकी युवा शक्ति सार्वदेशिक आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के अंतर्गत पूरे भारत में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ रही है। यूं तो आर्य वीर, वीरांगना दल के द्वारा चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर वर्षभर विभिन्न स्थानों पर निरन्तर चलते ही रहते हैं किन्तु ग्रीष्म कालीन अवकाश के दिनों में विशेष रूप से इन रचनात्मक शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी शिविरों के आयोजनों का शुभारंभ हो गया है। इन प्रशिक्षण शिविरों के आयोजनों की विस्तृत जानकारी एवं शिविरों में भाग लेने के लिए सम्पर्क सूत्र पृष्ठ 8 पर प्रकाशित किए गए है।

आज का युग कंपीटिशन का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा युवक और युवतियों को इतना तनाव ग्रस्त कर देती हैं कि वे अपने वास्तविक स्वरूप से भी अंजान हो जाते हैं। जीवन निर्माण की इस महत्वपूर्ण उम्र में युवा स्वाभाविक रूप से दूसरों का अनुकरण करता ही करता है, सबसे पहले वह अपनी माता का, फिर पिता का, इसके बाद में शिक्षकों का और अगले क्रम में मित्रों का अनुकरण करता है, अनुकरण के इस दौर में वह माता-पिता और शिक्षकों के साथ यह भी भूल जाता है कि जब तक शारीरिक उन्नति नहीं होगी तब तक आत्मबल भी नहीं बढ़ेगा और जब तक आत्मबल नहीं बढेगा तब तक व्यक्तित्व विकास संभव नहीं होगा, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त करने में समर्थ नहीं होगा। इसी कारण आजकल का युवा तनाव ग्रस्त होकर खीझ और कुढ़न के वातावरण में, फैशन परस्ती के जाल में फंसकर बड़े-बड़े बाल रखे हुए, कानों में बाली पहने हुए, हाथों में कड़ा या कंगन डाले हुए, पीठ पर बैग लटकाए निराश, उदास, हताश और चिंतित सा होकर फोन की स्क्रीन पर अपनी नजर गड़ाए इधर-उधर भटकता कहीं पर भी मिल जाता है। और इसी स्थिति में युवाओं को अपना उज्ज्वल भविष्य दिखाई दे रहा है।

अगर घर वाले या कोई भी शुभचिंतक उन्हें इस भयावह स्थिति से निकलकर आदर्श दिनचर्या, सही समय पर सोना, जागना, व्यायाम, आसन, प्रणायाम, रनिंग, सैर, उचित स्वास्थ्य वर्धक खानपान, देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रति सजग करने का प्रयास करता है तो ये कल्याणकारी बातें उसे पुरानी और घिसी पिटी लगने लगती हैं और वह अनजाने में उन महत्वपूर्ण बातों को नजरंदाज कर अपनी आदतों के अनुसार चलता रहता है। परिणामस्वरूप जब उसे समझ आती है तब तक बहुत देर हो जाती है। - *शेष पृष्ठ 7 पर*

आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के कुछ अति विशेष प्रकाशन
आइए, साहित्य प्रकाशन में सहभागी और सहयोगी बनें

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

आर्य समाजी जेलों में

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौरक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

आर्य समाज Today

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

संस्मरण एवं श्रद्धांजलि

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा।

एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां नि:शुल्क दी जाएंगी।

ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका

200वीं जयन्ती और 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उद्देश्य रहेगा।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें

उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री डाक/ईमेल अथवा व्हाट्सएप्प पर शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com; 9540097878

बन्धुओ, आज आर्य समाज जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष को हर्षोल्लास से मना रहा है, तब हमें कुछ विशेष पुस्तकों के प्रकाशन में बढ़-चढ़ कर आगे आना चाहिए। इसके लिये यह आवश्यक नहीं है कि आप मान्यता प्राप्त लेखक ही हों, इसके लिए आपकी केवल दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए और आप अपनी सरल भाषा में ही निम्नलिखित विषयों पर आधारित लेख, ऐतिहासिक तथ्य, आर्य समाज की संस्थाओं के विषय में जानकारी, संस्मरण एवं श्रद्धांजलि तथा ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका, आर्य सन्देश विशेषांक में लेख आदि का सहयोग करके सहभागी बने।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

19 मई, 2025
से
25 मई, 2025

देववाणी-संस्कृत

प्रभु के रक्षण के निराले ढंग

वेद-स्वाध्याय

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।।

–ऋ 1।4।6

ऋषिः-मधछुन्दाः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ– दस्म= हे पापनाशक इन्द्र! **अरिः उत** =शत्रु भी **नः सुभगान्** [**वोचेयुः**]= हमारी अच्छाइयों को, हमारे सौभग्यों को कहें **उ**= और **कृष्टयः वाचेयुः**=सामान्य मनुष्य तो कहें ही। फिर भी हम **इन्द्रस्य इत्**=तुझ परमेश्वर के ही **शर्मणि**= सुख में **स्याम**= रहें, होवें।

विनय– हे पापों और बुराइयों का उपक्षय करनेवाले जगदीश्वर! तुम्हारी कृपा से मैं इतना उच्च हो जाऊँ कि मेरी अच्छाइयों का बखान मेरे शत्रु भी करें। मेरी ओर से तो मेरा कोई शत्रु नहीं होना चाहिए, परन्तु जो मेरे प्रतिद्वन्दी हैं–जिनके विचार मेरे विचारों से नहीं मिलते, जो मेरे वायुमण्डल से बिल्कुल उलटे वायुमण्डल में रहते हैं। उन मेरे विरोधी भाइयों के लिए यह स्वाभाविक होगा कि उनके कानों में सदा मेरे अवगुण ही पहुँचे और उनका दृष्टिकोण ही ऐसा होगा कि उन्हें मेरी बुराइयाँ ही सहज में दिखाई देवें, परन्तु हे प्रभो! यदि मेरा जीवन बिल्कुल पवित्र होगा, मेरे आचरण में सर्वथा सचाई और शुद्धता होगी तो मेरे जीवन का उस दूरस्थ (विचारों में मुझसे दूर रहने वाले) भाई पर भी प्रभाव क्यों न होगा? बस, हे प्रभो! मेरे अन्दर से सब बुराइयों का नाश करके मुझे ऐसा उच्च बना दो कि जो मुझसे अत्यन्त विपरीत परिस्थिति में रहते हैं उनपर भी मेरी अच्छाई की, उच्चता की छाप पड़े बिना न रहे। सामान्य मनुष्य तो मुझे अच्छा कहेंगे ही, मेरी स्तुति करेंगे ही, परन्तु इन विरोधियों के अन्तःकरण भी मेरी विशुद्धता को पहचानें, यही इच्छा है। अपने सच्चे विरोधियों से जो यश मिलेगा वह खरा यश होगा, उसमें अत्युक्ति आदि का खोट न होगा। मित्रों और उदासीनों से तो यश मिला ही करता है, उसमें कुछ विशेषता नहीं, उसका कुछ मूल्य नहीं।

परन्तु हे प्रभो! इस यश को पाकर मैं फूल नही जाऊँगा, तुम्हें भूल नहीं जाऊँगा, वरन् इस यश को भूला रहकर सदा तुम्हारी ही याद में सुखी रहूँगा। यह यश मेरी विशुद्धता की पहचानमात्र होगा, यह मेरे सुख का कारण कभी नहीं होगा। मेरा सुख तो तुम्हारी शरण में है। बाहरी दुनिया चाहे मेरी घोर निन्दा करे, मुझे अपमानित करे, तो भी मैं तेरे प्रसाद से पाये सुख से वैसा ही सुखी रहूँगा जैसाकि बाहरी यश पाने पर हूँ। मेरा सुख या दुःख बाहरी यश या अपयश पर अवलम्बित न होग। हे प्रभो! ऐसी कृपा करो कि तुझ परमेश्वर की प्रसन्नता से पाये हुए सुख में ही मैं सदा सुखी, आनदिन्त और सन्तुष्ट रहूँ। बाहरी यश द्वारा सुख पाने की चाह मुझमें उत्पन्न न हो, बाहरी यश मिलते रहने पर भी उस यश से सुख पाने की चाह मुझमें कभी उत्पन्न न हो। मैं तुम्हारे ही सुख में रहूँ।

–:साभार:–
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

देशभर में पाकिस्तान परस्त जासूसों की धरपकड़ जारी

देश में अभी और कितने छिपे हैं गद्दार?

जब हम इतिहास के पन्नों को पलटते हैं तो राजा पृथ्वीराज चौहान के नाम के साथ-साथ एक गद्दार जयचंद का नाम भी जरूर लिया जाता है। जयचंद की गद्दारी के चलते मोहम्मद गौरी से पृथ्वीराज चौहान हार गए थे। हालांकि युद्ध जीतने के बाद मोहम्मद गौरी ने जयचंद को भी मार गिराया था। दूसरा एक समय जब महाराणा प्रताप दर-दर भटक रहे थे और अपने राज्य को आजाद करवाने के लिए घास की रोटियां खाकर गुजारा कर रहे थे, उस समय मानसिंह मुगलों का साथ देकर महाराणा प्रताप को पराजित करने की योजना बना रहा था।

ये अतीत के किस्से हैं, तब लड़ाई तलवार-भालों से हुआ करती थी। युद्ध भूमि में कौन गद्दार विरोध में दूसरे की तरफ खड़ा है, गर्दन घुमाकर पता चल जाता था। किंतु आज ऐसा नहीं है, ये आधुनिक युग है। टेक्नोलॉजी का युग है। आज गद्दार खोजने पड़ते हैं, वो बिल में छिपे रहते हैं और वहीं से अपना देशविरोध का काम करते रहते हैं। हाल ही में ऐसा एक बार फिर देखने को मिला। पहलगाम हमले के बाद भारत में रह रहे पाकिस्तान के जासूसों की धरपकड़ तेज हो गई है। पिछले दो हफ्तों में पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश से कुल 12 लोगों को पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। इनमें हिसार की ज्योति मल्होत्रा, कैथल का देविंदर सिंह, कैराना का नौमान, नूंह का अरमान और तारीफ, जालंधर का मोहम्मद मुर्तजा, मलेरकोटला की गजाला और यामीन, कुल तीन राज्यों के 11 लोग शामिल हैं। सभी पर एक आरोप है, ये पाकिस्तान के लिए जासूसी कर रहे थे। ज्यादातर में एक और सामान्य कनेक्शन है– दानिश। दिल्ली में पाकिस्तानी हाई कमीशन में अफसर रहे दानिश पर भारत सरकार को पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के लिए काम करने का शक था।

भारत सरकार ने 13 मई, 2025 को दानिश को 24 घंटे में देश छोड़ने का आदेश दे दिया। इससे पहले ही पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वालों की धरपकड़ शुरू हो चुकी थी। शुरुआत हुई गजाला से। अब तक 11 लोग पकड़े जा चुके हैं।

अब तक की पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपी पाकिस्तानी एजेंटों को संवेदनशील जानकारी दे रहे थे। इनके मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की फॉरेंसिक जांच और पैसों के लेन-देन की जांच की जा रही है। एक जानकारी ये भी है कि कुछ आरोपियों को यूपीआई के जरिए पैसे मिलते थे।

दरअसल, फलकशेर मसीह और सूरज मसीह नाम के दो आरोपियों को पंजाब से 4 मई को गिरफ्तार किया गया था। ये दोनों अमृतसर के अजनाला के रहने वाले हैं। इन दोनों पर आरोप है कि इन्होंने आर्मी कैंट, बीएसएफ कैंप, एयरबेस की तस्वीर और संवेदनशील जानकारी पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई को भेजी। पूछताछ के दौरान गज़ाला ने कथित तौर पर कबूल किया कि उसने भारतीय सेना की गतिविधियों के बारे में गोपनीय जानकारी नई दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायोग में तैनात पाकिस्तानी अधिकारी के साथ साझा की थी। गज़ाला ने आगे खुलासा किया कि वह पैसे के लिए ऐसा कर रही थी और पाकिस्तान ने उसे दो लेन-देन में 30,000 रुपये भेजे थे।

15 मई से आरोपी जासूसों की गिरफ्तारी में तेज़ी देखी गई। सुखप्रीत सिंह और करणबीर सिंह को 15 मई को पंजाब से गिरफ्तार किया गया। सुखप्रीत सिंह और करणबीर सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर से संबंधित गोपनीय जानकारी पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई को दी। इसमें पंजाब, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर

भारत सरकार ने 13 मई, 2025 को दानिश को 24 घंटे में देश छोड़ने का आदेश दे दिया। इससे पहले ही पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वालों की धरपकड़ शुरू हो चुकी थी। शुरुआत हुई गजाला से। अब तक 11 लोग पकड़े जा चुके हैं।

अब तक की पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपी पाकिस्तानी एजेंटों को संवेदनशील जानकारी दे रहे थे। इनके मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की फॉरेंसिक जांच और पैसों के लेन-देन की जांच की जा रही है। एक जानकारी ये भी है कि कुछ आरोपियों को यूपीआई के जरिए पैसे मिलते थे।

में सैन्य गतिविधियों और प्रमुख रणनीतिक स्थानों की जानकारी शामिल थी। जासूसी कांड में हरियाणा से चार आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। नौमान इलाही को हरियाणा से 15 मई को गिरफ्तार किया गया। ये यूपी के कैराना का निवासी है और पानीपत की फैक्ट्री में बतौर गार्ड काम करता है। इस पर आरोप है कि यह आईएसआई से संपर्क में था।

16 मई को हरियाणा से ही देविंदर सिंह को गिरफ्तार किया गया। देविंदर, कैथल का रहने वाला है और पोस्ट ग्रैजुएशन का छात्र है। वह पाकिस्तान भी जा चुका है। यात्रा के दौरान वह कथित तौर पर पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों के संपर्क में आया और वापस आने के बाद भी उनके संपर्क में रहा। पुलिस ने कहा है कि देविंदर सिंह ने कथित तौर पर बाहर से पटियाला छावनी की कुछ तस्वीरें खीचकर पाकिस्तान भेजने की बात स्वीकार की है।

लेकिन इन सबसे ज्यादा चर्चा जिस नाम की है वह है ज्योति मल्होत्रा। पुलिस ने हरियाणा से 16 मई को इसे गिरफ्तार किया। ज्योति चर्चित यूट्यूबर हैं। बताया जा रहा है कि ज्योति ने कई बार पाकिस्तान और चीन यात्रा की है। हिसार के पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन ने 18 मई को कहा कि पाकिस्तानी खुफिया तंत्र ज्योति मल्होत्रा को एक संपत्ति के रूप में विकसित कर रहे थे। सावन ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष के दौरान वह कथित तौर पर पाकिस्तान के संपर्क में थी।

इसके अलावा नूंह के ही तारीफ को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तारी के बाद आरोपी का एक वीडियो भी सामने आया। वीडियो में उसने माना कि वह कई बार पाकिस्तान गया था और वहां के अधिकारियों से मिला था। उसने यह भी कबूला कि उसने पाकिस्तानी अधिकारियों को 'सिम कार्ड दिए' और एक पाकिस्तानी अधिकारी के साथ 'पैसों का लेनदेन' भी किया। दावा है कि यही लोग उससे 'संवेदनशील जानकारी' मांगते थे। इसके अलावा यूपी से एक और आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। शहजाद को 19 मई को यूपी के रामपुर से एसटीएफ ने पकड़ा। आरोप है कि वह कई बार पाकिस्तान में गया। वह जासूसी के साथ-साथ कॉस्मेटिक, कपड़े, मसाले की तस्करी करता था। असल में भारत के अंदर पाकिस्तानी दूतावास का एक अधिकारी था एहसान-उर-रहीम जिसे दानिश के नाम से जाना जाता है। पहलगाम हमले की जांच में ये सामने आया है कि नई दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायोग का अधिकारी एहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश जासूसी सिंडिकेट का मुख्य आरोपी है।

– शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है तनाव मुक्ति

गतांक (5 से 11 मई) के आर्यसन्देश से आगे –

लेकिन इसके लिए जरूरी है कि अपनी हिम्मत को, साहस को, अपने मनोबल को टूटने मत देना, शरीर की हानि, पैसे की हानि, रिश्ते-नातों की हानि सब कुछ ठीक हो सकता है, लेकिन मनोबल की हानि, मनोबल का कमजोर होना बड़ा खतरनाक होता है, यह आदमी को हर तरह से कमजोर कर देता है। इसलिए मनोबल को मजबूत बनाए रखिए।

मन एक सरोवर है, जिसमें हर्ष और शोक की लहरें हमेशा चलती रहती हैं। इसलिए दु:ख आने पर ज्यादा निराश नहीं होना। परिस्थितियों का अंधेरा है, तो मनोबल का दीपक जलाइए। अंधकार स्वत: मिट जाएगा। भगवान में अपने विश्वास को बनाए रखिए। उसकी भक्ति में बड़ी शक्ति है, अपना कर्म पूरी निष्ठा के साथ करिए। उसकी कृपाओं को याद कीजिए, मन में श्रद्धा रखिए, आपकी शक्ति बनी रहेगी।

जीवन में उदासियां आएं तो भी मुस्कुराहट के फूल खिलाते रहिए, ज्यादा उदास हों, तो ज्यादा मुस्कराइए, तब मुस्कराहट की ज्यादा जरूरत होती है। धैर्य को टूटने न दें, साहस को बनाएं रखें।

विपरीत परिस्थितियों में जब आप मन से कमजोर पड़ जाते हैं तब आपको और ज्यादा कमजोर करने वाली ताकतें घेर लेती हैं। अच्छा सेनापति वही होता है जो अपनी फौज को कभी कमजोर नहीं होने देता, उसका मनोबल, उसकी हिम्मत नहीं टूटने देता, आप भी अपने घर परिवार, समाज के सेनापति हैं, घर में दु:ख या मुसबीत आए, तो घरवालों का मनोबल न टूटने दें। दुनिया के सामने अपनी मुसीबतों का रोना कभी मत रोएं, दुनिया केवल हंसेगी,

संतुलन बनाए रखें, खुद को खुद ही समझाने वाले बनिए, अपने आंसुओं को स्वयं ही पोंछने वाले बनिए, कोई दूसरा आपको आपसे ज्यादा समझने-समझाने वाला नहीं हो सकता। दुनिया में भीड़ बहुत है, पर सच में हर इनसान को अकेले ही जीना पड़ता है। अपने कर्मों का दु:ख-सुख हर इनसान खुद ही भोगता है। सुख में सब साथी बनेंगे, पर दु:ख में सब हाथ छोड़ देंगे। दु:ख-सुख दोनों समय में जो साथ देगा वह केवल ईश्वर है, ईश्वरीय की वाणी वेद का ज्ञान ही साथ देगा, ईश्वर की कृपा साथ देगी, ईश्वर का दिशा-निर्देश साथ देगा। वेद के अमृत वचन सुनिए, पढ़िए, रास्ता खुलेगा, अंधेरा छटेगा, सवेरा होगा।

विपरीत परिस्थितियों में जब आप मन से कमजोर पड़ जाते हैं तब आपको और ज्यादा कमजोर करने वाली ताकतें घेर लेती हैं। अच्छा सेनापति वही होता है जो अपनी फौज को कभी कमजोर नहीं होने देता, उसका मनोबल, उसकी हिम्मत नहीं टूटने देता, आप भी अपने घर परिवार, समाज के सेनापति हैं, घर में दु:ख या मुसबीत आए, तो घरवालों का मनोबल न टूटने दें। दुनिया के सामने अपनी मुसीबतों का रोना कभी मत रोएं, दुनिया केवल हंसेगी, याद रखें दुनिया में जो भी आया है, ऐसा कोई नहीं है, जो कभी रोया न हो, चाहे वह राम थे या कृष्ण थे, जिसने भी संसार में जन्म लिया, उसे रोना अवश्य पड़ा, इनसान का जन्म ही रोने से प्रारंभ होता है। पहला श्वास अंदर आते ही बाहर रोने की आवाज आना शुरू हो जाती है। किंतु जन्म के समय का रोना तो जीवन का प्रतीक है, उस समय बच्चे के रोने की आवाज को सुनकर तो सब खुश होते हैं, लेकिन जीवन के सफर में मुसीबतों के बीच हंसना-मुस्कराना ही जीवन की शोभा है। मन को मजबूत रखें, हिम्मत-हौंसले के साथ कर्म करते रहें। तनाव में जीने की आदत के बहुत बुरे परिणाम सामने आते हैं, जो तनाव पैदा करता है, जैसे शोर-शराबा, भीड़-भाड़, तथा कार्य या परिवार की ओर से दबाव। इन पर्यावरणीय दबावों की पहचान कर और उनसे बचने या उनसे मुकाबला करने के बारे में सीखने से हमें तनाव के स्तर को कम करने में मदद मिल सकती है।

आर्य संदेश में प्रकाशित स्वास्थ्य संदेश के कॉलम में जो स्वास्थ्य संबंधी लेख, मौसम परिवर्तन में सावधानी बरतने, आसन, प्रणायाम, आहार, उचित जीवन शैली अथवा औषधियों से होने वाले लाभ चिकित्सा पद्धति आदि की जानकारी दी जाती है, तो वह केवल ''सर्वे सन्तु निरामया'' की परोपकारी भावना तक ही सीमित है। अतः आर्य संदेश में प्रकाशित व स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी का लाभ तो लें किंतु अगर कोई अस्वस्थ्य है तो अपने चिकित्सक से ही उपचार कराए। -संपादक

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

पाखण्डों और बुराईयों को दूर करने हेतु नए मतों और ग्रन्थों का जन्म

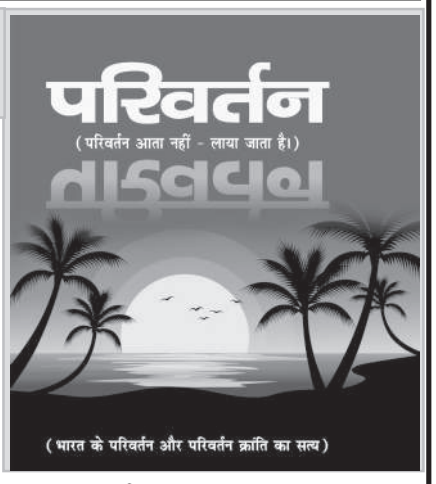

गतांक से आगे -

भारत में चारवाक नाम के विचारों के प्रवाह के लिए 'बृहस्पति' नामक व्यक्ति ने धर्म के मूल के विपरीत, केवल आनन्द लेने का मार्ग ही धर्म बताया। यह तो ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता की ऐसी प्रवृत्तियों ने जन्म क्यों लिया पर अनुमान से कहा जा सकता है कि मजबूत राजसत्ता, सबल ज्ञानवेत्ता और सशक्त सामाजिक ताने-बाने के अभाव में ऐसी उच्छृंखल प्रवृत्तियां जन्म लेती हैं। महाभारत के पश्चात् ऐसे ही हालात बन चुके थे कोई जिम्मेदारी, कोई जवाबदेही किसी की, किसी के प्रति नहीं थी। बृहस्पति नाम के व्यक्ति ने ऐसे विचारों की रचना की—

यावत जीवेत सुखम जीवेत ऋण
कृत्वा घृतम पीबेत।
भस्मी भूतस्य भस्मांतम शरीरम्
पुनरागमनम् कुत: ॥

अर्थात् जब तक जियो सुख से जियो, ऋण लेकर भी घी पियो। जब शरीर भस्म हो जाएगा फिर किसने देखना है—ऐसी प्रवृत्तियों ने समाज में उच्छृंखलता की प्रवृत्तियों को जन्म दिया। ऐसी-ऐसी अन्य अनेक नाना प्रकार के वेद विरुद्ध विचारों का जन्म हुआ। दुर्भाग्य से इन सभी विचारधाराओं के प्रवर्तक इनको वेद ज्ञान ही बताकर फैलाने का काम कर रहे थे।

अन्यों के लिए वेद के द्वार बंद कर दिए गए और खुद वेद पाठ पढ़ने की आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि बिना पढ़े ही वही मान-सम्मान और अधिकार सबको मिलता रहा। फलस्वरूप वेद के नाम पर मनमानी होने लगी। परिणाम—वेद के विपरीत विचारधाराओं का सबसे बड़ा प्रभाव पड़ा कि ज्ञान के अभाव में ईश्वर की मान्यता में, मूर्ति कला को ईश्वर की मूर्ति के रूप में पूजे जाने की परम्पराएं शुरु हुई, एक निराकार ईश्वर की मान्यता के विपरीत अनेकों को पूजा जाने लगा। वेद के गलत अर्थों के चलते यज्ञों में बलि देने जैसी कुप्रथाओं ने जन्म लिया। ईश्वर के स्थान पर व्यक्ति की पूजा के मार्ग खुले। अपनी बातों को सही सिद्ध करने के लिए नए-नए ग्रन्थ लिखे जाने लगे। अपनी अश्लील हरकतों और खान-पान की गलत आदतों को सही सिद्ध करने के लिए इन्हें नकली ग्रन्थों में अंकित किया जाने लगा ताकि कहा जा सके कि ''हम तो धर्म ग्रन्थों के अनुसार ही आचरण कर रहे हैं'' और समाज का निरन्तर पतन होता चला गया।

ऐसे में संसार में कुछ विशेष आत्माओं का जन्म हुआ, उन्होंने उस समय वेद के नाम पर फैल चुके अन्याय, अज्ञान को गहराई से देखा, समझा और उन विचारों को, सिद्धांतों को गलत समझ कर नई विचारधारा को जन्म दिया और लाखों की संख्या में उनके अनुयायी बनने लगे। किन्तु चूंकि ये महानुभाव भी वेद के वास्तविक और पूर्ण ज्ञाता नहीं थे इसलिए पूर्ण सत्य के आधार पर नहीं, हां, समाज में व्याप्त हो चुके पाखण्डों और कुछ स्थापित बुराईयों को दूर करने के लिए नए-नए धर्म ग्रन्थों और नए-नए मतों का जन्म हुआ। जैसे भारत में—

जैन स्वामी महावीर द्वारा स्थापित जैन धर्म, **महात्मा बुद्ध** द्वारा स्थापित बौद्ध मत (धम्म मत)

भारत से बाहर जन्मे मतों के जन्मदाता एवं उनके मुख्य ग्रन्थ निम्न प्रकार थे—

जरथुस्ट्र द्वारा स्थापित **पारसी मत** जिनकी धर्म पुस्तक (जिन्दवेस्ता) लगभग 3500 वर्ष पूर्व।

अब्राहम और मूसा द्वारा स्थापित **यहूदी मत** जिनकी धर्म पुस्तक (तनख) लगभग 4000 वर्ष पूर्व।

ईसा मसीह द्वारा स्थापित **ईसाई मत** जिनकी धर्म पुस्तक (बाइबल) 2000 वर्ष पूर्व येरुशलम में।

मोहम्मद साहब द्वारा स्थापित **मुस्लिम मत** जिनकी धर्म पुस्तक (कुरान) 1400 वर्ष पूर्व मक्का में।

इन सभी महापुरुषों ने तत्कालीन समाज में कुरीतियों को देखा, महसूस किया, ईश्वर की उपासना के स्थान पर अन्यों की उपासना को गलत बताते हुए एक नए विचार के साथ नए पंथों की स्थापना की।

जैनमत और बौद्ध मत की स्थापना वर्तमान भारत में ही हुई। अब्राहम द्वारा यहूदी मत की स्थापना '**मध्य एशिया**' में की गई। कुछ समय पश्चात् उसी विचारधारा में कुछ बदलाव के कारण, विरोधाभासों के कारण ईसा मसीह ने ईसाई मत की स्थापना '**येरुशलम**' में की किन्तु उनके विचारों में भी पूर्णता न जानकर या पूर्ण न मानकर, अनेक विरोधाभासों के चलते, हजरत मोहम्मद साहब ने मुस्लिम मत की '**मक्का**' में शुरुआत की। इन सभी में कुछ बातें वेद सम्मत किन्तु अनेक बातें वेद के मूल ज्ञान के विपरीत थी।

– क्रमश:

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

19 मई, 2025
से
25 मई, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

आर्यसमाज के अधिकारी, कार्यकर्त्ता एंव सदस्य को अधिकाधिक नए लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य लेकर

दिल्ली में लगातार हो रही हैं आर्यसमाज की जन महासम्पर्क अभियान बैठकें

आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष को लेकर चहुंओर अत्यन्त उत्साह का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत के कोने कोने में और विदेशों में पिछले लम्बे समय से यज्ञ, योग, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण का एक प्रवाह चल रहा है। बड़े-बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन और प्रचार-प्रसार तथा विस्तार के विविध कीर्ति स्तंभ स्थापित हो रहे हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं के अनुरूप आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यताओं और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के विश्व स्तर पर अभियान चलाए जा रहे हैं।

इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जनसंपर्क अभियान को लेकर विभिन्न स्थानों पर चिंतन, मनन और संगोष्ठियों के आयोजन संपन्न हो रहे हैं। सभा अधिकारी, क्षेत्रीय समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उत्साह पूर्वक सहभागी बन रहे हैं, आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कृत संकल्पित आर्यजन स्वयं आगे आ रहे हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की मशाल से जगत को आलोकित कर रहे हैं। इस क्रम में गत सप्ताह में पश्चिमी दिल्ली में आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी, आर्यसमाज इन्द्रापार्क पालम कालोनी, मध्य दिल्ली में आर्यसमाज हनुमान रोड, दक्षिण दिल्ली में आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी एवं आर्यसमाज अमर कालोनी तथा आर्यसमाज मयूर विहार-2 दिल्ली में महा जनसम्पर्क अभियान के लिए बैठकें सम्पन्न हुई हैं तथा बैठकों का दौर पूरी दिल्ली में निरन्तर जारी है।

- *सम्पादक*

पश्चिम दिल्ली क्षेत्र की आर्यसमाज जनकपुरी सी-3 एवं इन्द्रा पार्क की बैठक लेते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, मन्त्री श्री वीरेन्द्र सरदाना एवं श्री सुखबीर सिंह आर्य

आर्यसमाज हनुमान रोड की बैठक लेते सभा के उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी एवं अमर कालोनी की बैठक लेते श्री सतीश चड्ढा

पूर्वी दिल्ली में आर्यसमाज मयूर विहार-2 की बैठक लेते सभा के उप प्रधान श्री अशोक कुमार गुप्ता

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर आर्य समाज सागरपुर का तीन दिवसीय वेद प्रचार उत्सव

आर्य समाज के महा जनसंपर्क अभियान में तेजी लाएं आर्यजन - धर्मपाल आर्य

आर्य समाज सागरपुर द्वारा 9 से 11 मई 2025 तक तीन दिवसीय वेद प्रचार उत्सव हर्षोल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। जिसके समापन समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी धर्मपाल जी सपत्नीक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने आर्यजनों को संबोधित करते हुए अपने संदेश में कहा कि वर्तमान का कालखंड में आर्य समाज एक नए युग की ओर बढ़ रहा है। हम सब महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजन लगातार मना रहे हैं। उन्होंने अक्टूबर मास में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के विषय में कहा कि सब इस विशाल विराट आयोजन के लिए अभी से तैयारी करें। बच्चों, युवाओं को विशेष रूप से संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अपने घरों पर ओम ध्वज लगाएं, घरों में वेद और साहित्य रखें और साथ ही 'नमस्ते' अभिवादन का स्टिकर लगाकर आर्य समाज की पहचान को बनाए रखें और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री वीरेंद्र सरदाना, पश्चिम वेद प्रचार मंडल के कोषाध्यक्ष व केंद्रीय सभा के मंत्री डॉ. मुकेश आर्य, राज नगर के प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य, इंद्रा पार्क आर्य समाज के प्रधान श्री प्रीतम सिंह व अन्य आर्य समाज के पदाधिकारी और सदस्यों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी, आर्य वीर दल के बच्चों का प्रेरक कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा, आर्य समाज के धर्माचार्य योगेन्द्र शास्त्री जी यज्ञ के ब्रह्मा रहे और उनके वैदिक प्रवचनों से आर्यजन लाभान्वित हुए, सभा संवर्द्धक श्री राजवीर शास्त्री के मधुर और सारगर्भित भजनों ने सबको मंत्रमुग्ध किया। कार्यक्रम में प्रतिदिन विशेष कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, अधिकारियों व सदस्यों का पीतवस्त्र पहनाकर स्वागत और सम्मान किया गया। प्रधान श्री मान्धाता आर्य ने श्रोताओं, विद्वानों और दानदाताओं का हृदय से धन्यवाद किया। - **राकेश कुमार आर्य, मन्त्री**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की राजार्य सभा के माध्यम से राष्ट्रहित में हस्तक्षेप

दिल्ली में अवैध घुसपैठियों के खिलाफ बुलडोजर कार्यवाही की माँग

20 मई, 2025, नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की राष्ट्रहित, संस्कृति एवं वैदिक चेतना हेतु प्रतिबद्ध उपसमिति राजार्य सभा ने आज एक महत्वपूर्ण मांगपत्र जारी करते हुए भारत सरकार, दिल्ली सरकार, दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी.डी.ए) और लोक निर्माण विभाग (पी.डब्ल्यू.डी.) से दिल्ली के ओखला (यमुना पट्टी) व जहांगीरपुरी क्षेत्र में बढ़ते हुए अवैध बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों के विरुद्ध गुजरात मॉडल पर कठोर कार्यवाही की माँग की है।

राजार्य सभा की ओर से कहा गया कि यह केवल अतिक्रमण का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक संतुलन और आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व का प्रश्न है। जिस प्रकार गुजरात सरकार ने राज्यहित में घुसपैठियों पर बुलडोजर चलाकर सख्त संदेश दिया है, दिल्ली में भी वैसी ही निर्णायक कार्यवाही अब आवश्यक हो गई है।

सभा ने यह स्पष्ट किया कि यमुना की पट्टी, शाहीन बाग, कालिन्दी कुंज और जहांगीरपुरी जैसे क्षेत्रों में बिना किसी वैध दस्तावेज के रहने वाले लोग जिहादी तत्वों, नकली दस्तावेज नेटवर्क, नशे के धंधे और धार्मिक उन्माद को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप न केवल अपराधों में वृद्धि हुई है, बल्कि हिन्दू परिवारों का पलायन भी देखा जा रहा है।

राजार्य सभा की ओर निम्नोंकित मुख्य माँगें सरकार के समक्ष रखी गई –

- DDA व PWD के माध्यम से तत्काल अवैध कब्जों की पहचानकर निष्कासन कार्यवाही की जाए।
- IB/NIA और NCRB की रिपोर्टों के आधार पर खतरनाक बस्तियों को चिन्हित किया जाए।
- सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों का हवाला देते हुए "राष्ट्रीय सुरक्षा सर्वोपरि" नीति लागू की जाए।
- जिन एनजीओ/व्यक्तियों ने इन घुसपैठियों को बसाने में भूमिका निभाई है, उनके लाइसेंस व पंजीकरण तत्काल रद्द किए जाएं।
- दिल्ली में 'घुसपैठ मुक्त भारत अभियान' चलाया जाए।

सामूहिक हिन्दू संगठनों को एकत्र कर सरकार पर जनदबाव बनाया जाएगा। राजार्य सभा ने यह भी घोषणा की है कि वह शीघ्र ही विश्व हिन्दू परिषद, संत समाज, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, विभिन्न आरडब्ल्यूए और सुरक्षा चिन्तित नागरिक संगठनों के साथ संयुक्त बैठक आयोजित करेगी, जिसमें एकमत से कार्ययोजना बनाकर सरकार को माँगपत्र सौंपा जाएगा।

सभा प्रधान आर्य रविदेव गुप्त ने कहा कि यह समय चुप रहने का नहीं है। अगर हमने अभी आवाज नहीं उठाई, तो दिल्ली हमारी नहीं रहेगी। यह दिल्ली की भूमि, संस्कृति और भविष्य की लड़ाई है और राजार्य सभा इसके लिए हर मंच पर आवाज़ उठाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सेवा प्रकल्प – स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के अन्तर्गत

दिल्ली की विभिन्न सेवा बस्तियों एवं सार्वजनिक स्थलों पर सामान्य स्वास्थ्य जाँच शिविर सम्पन्न

सर्वविदित है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा निरन्तर मानव सेवा और राष्ट्र कल्याण के कार्यों के प्रति समर्पित है। सभा द्वारा जहाँ एक तरफ झुग्गी- झोपड़ियों में, सेवा बस्तियों में रहने वाले मज़दूर स्त्री-पुरुष और बच्चों के स्वास्थ्य जाँच शिविर के आयोजन किए जाते हैं, वहीं पर समय-समय पर विशेष जाँच शिविरों के भी आयोजन किए जाते हैं।

आज कल गर्मी के मौसम में दिल्ली में लगातार बीमारियों का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। इस बीच सेवा बस्तियों में रहने वाले ग़रीब लाचार मजबूर लोगों के सामने अपने दिहाड़ी मज़दूरी करना हमेशा की चुनौती है वहीं हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी चारों तरफ़ मच्छर-मक्खी, गंदगी और गरमी-सर्दी के कारण बुखार, खाँसी आदि की समस्याएँ सबके सामने है। झुग्गी-झोपड़ियों की जर्जर हालत उसमें भी बुजुर्गों और बच्चों की परेशानी और धन का अभाव आदि ये तमाम समस्याओं को देखते हुए आर्य समाज की सेवा भावी इकाई स्वास्थ्य सेवा जागरूकता अभियान स्वास्थ्य सेवा को लगातार आगे बढ़ रही है। इस समय जब चारों तरफ़ दिल्ली में मौसम परिवर्तन के कारण बीमारियों का प्रकोप है तब वो ग़रीब दिहाड़ी मज़दूर लोगों के स्वास्थ्य की चिन्ता करते हुए जगह जगह स्वास्थ्य जाँच शिविर के आयोजन किए जा रहे हैं। यह मानवता की पुकार है, इसलिए पिछले दिनों आर्य समाज की स्वास्थ्य जागरूकता की टीम एंबुलेंस के साथ सेवा बस्तियों में जाकर लगातार लोगों के स्वास्थ्य की जाँच कर रही है। परिणाम स्वरूप आम साधारण लोगों को अपने शरीरों में व्याप्त बीमारियों का पता चल रहा है और वे केवल लक्षणों के आधार पर कैमिस्ट से दवाई न लेकर प्रोपर अपनी बी.पी., शुगर, ब्लड जाँच की रिपोर्ट को डॉक्टरों को दिखाकर उपचार प्राप्त कर रहे हैं, इससे सैकड़ों लोगों को लगातार लाभ प्राप्त हो रहा है। यहां प्रस्तुत है दिनांक 26 अप्रैल को मायापुरी के मिथुन पार्क और 3 मई को चित्रा विहार में स्वास्थ्य जाँच शिविरों की झलकियाँ

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ★ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ★

जन्मपत्री है या शोकपत्री

वह जन्म-पत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोक-पत्र' रखना चाहिये क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है तब सबको आनन्द होता है। परन्तु वह आनन्द तब तक होता है कि जब तक जन्म-पत्र बन के ग्रहों का फल न सुनें।

–सत्यार्थ प्रकाश

23

एक विवाह करना ही उत्तम

"द्विजो में स्त्री और पुरुष का एक ही बार विवाह होना वेदादि शास्त्रों में लिखा है, द्वितीय बार नहीं।"

–सत्यार्थ प्रकाश

24

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

गतांक से आगे-

जो अविश्वासी हृदय के साथ मरता है, उसे भविष्य में निराशा दिखाई देती है। जिसे ईश्वर पर भरोसा नहीं, उसके लिए मौत एक अथाह अंधेरी खाई है। जिसने जीवन में केवल आस्तिकता का दम्भ भरा हो, मृत्यु के समय उसके मुंह पर से पर्दा उठ जाता है और जो प्रत्यक्ष में सन्तुष्ट दिखाई देता था, वह वस्तुतः अशान्तमय दिखाई देता है। मृत्युकाल सब पर्दों को उघाड़ देता है। उस समय कोई भाव छिपा नहीं रहता। महर्षि की मृत्यु बताती है कि उनका हृदय ईश्वर-विश्वास और धार्मिक श्रद्धा से परिपूर्ण था। उनका जीवन उज्ज्वल था, परन्तु मृत्यु उससे भी बढ़कर थी, वह दिव्य थी। इस भू-लोक पर ऐसे दृश्य कम दिखाई देते हैं। वह मृत्यु थी, जो नास्तिक हृदय के मरुस्थल में से भी आस्तिकता की सरस्वती बहा सकती थी।

जीवन के समय महर्षि के मित्र भी थे और शत्रु भी थे; परन्तु मृत्यु ने उन सब भेदों को दूर कर दिया। देश में मृत्यु का समाचार फैलते ही सार्वजनिक सहानुभूति का एक ऐसा शब्द उठा कि छोटे-छोटे विक्षोभ स्वतः दूर हो गए। ईसाई, मुसलमान, ब्राह्मो, थियोसॉफी-सभी ने एक स्वर से आर्यजाति के नेता की मृत्यु पर दुःख प्रकाशित किया। जीते-जी जो मुंह संकोचवश मौन रहते थे, वे खुल उठे और भारत के नेताओं और समाचार पत्रों ने दयानन्द की अकाल मृत्यु को देश के दुर्भाग्य का चिह्न समझा। सभी प्रकार के भारत-हितैषी सज्जनों ने महर्षि की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। आर्यसमाज को कितना कष्ट हुआ होगा, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। आर्यसमाज का सर्वस्व लुट गया। उसका मूलाधार नष्ट हो गया। समाजें अनाथ हो गई। उस समय समाजों की जो अनाथ दशा थी, उसकी कल्पना इस समय करना कठिन है। अब तो आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं, दर्जनों विद्वान् हैं, पुराने-पुराने विश्वासपात्र नेता हैं और एक के खाली स्थान पर बैठने वाला दूसरा महानुभाव विद्यमान है। उस समय आर्यसमाज और आर्यसमाजियों को एक महर्षि दयानन्द का भरोसा था। कोई झगड़ा हो तो वह निपटाएं, शास्त्रार्थ हो तो वही पहुंचें, उत्सव की शोभा उन्हीं से हो, सारांश यह कि समाज का सर्वस्व केवल वही थे। आर्यसमाज में जो व्यापी मातम की घटा छा गई, वह यथार्थ ही आर्यसमाज के बाहर समझदार हिन्दुओं ने महर्षि जी के वियोग को किस प्रकार अनुभव किया, उसका दिग्दर्शन पण्डित बाल कृष्ण भट्टद्व द्वारा सम्पादित, प्रयाग के 'हिन्दी प्रदीप' के लम्बे लेख की निम्नलिखित पंक्तियों से हो सकता है। महर्षि जी की मृत्यु का समाचार सुनकर प्रदीप ने लिखा था- 'हा! आज भारतोन्नति कमलिनी का सूर्य अस्त हो गया। हा! वेद का भेद मिटाने वाला सद्वैद्य लुप्त हो गया। हां दयानन्द सरस्वती! आर्यों के सरस्वती जहाज की पतवार बिना दूसरे को सौंपे तुम क्यों अन्तर्धान हो गए? हा! सच्ची दया के समुद्र! हा! सच्चे आनन्द के वारिद! अपनी विद्यामयी लहरी और हितोपदेश-रूपी धरा से परितप्त भारतभूमि को आर्द्र कर कहां चले गए? हा! चार दिन के चतुरानन! इस असभ्यता-प्रिय मण्डली में आपने-अपनी विलक्षण चतुराई को क्यों इस प्रकार सरल भाव से फैलाया?' इसी प्रकार लम्बा खेदपूर्ण लेख लिखकर भट्ट जी ने यह प्रकाशित कर दिया कि जो जन आर्यसमाज

के सभासद् नहीं परन्तु आर्यत्व से प्रेम करते थे, वे दयानन्द को आर्य जाति का नेता समझते थे, संकुचित मत का प्रचारक नहीं।

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

On this everyone said that we will take you there when you get rest, in this condition it is not right to travel again and again. On this Swami ji said that in two days we will get complete rest. This answer is worth remembering. Now blisters started appearing all over Swami ji's body. On October 29, Swamiji's body became very weak. He asked the servants to make him sit. When he was made to sit, he said, ''Leave it, I don't need support.'' Then for how long did he sit without support? At that time the breath was moving quickly, but Swamiji used to stop it and throw it forcefully, and was engrossed in the meditation of God. The pain was worse at night. On the second day, on 30th October, Dr. Newman was called. When the Dr. saw Swami ji, he said with great surprise that we are thankful to this good man, till date we have not seen any other person with such a strong heart, who has such immense pain from neck to foot, and he even sighs a little. At that time there was a lot of phlegm in Swami ji's throat, for which Dr. Newman tried many measures to get rid of it, but it did not help. At 11 o'clock the breath of the lord of the day started increasing. He said that he will go to the toilet. At that time, four men picked up Swamiji and made him sit on the toilet post. He went to the toilet and took water. He was made to sit on the bed as order. He sat for a while and then lay down. The breath used to move with great speed, and it seemed that Swami ji meditated on God by holding the breath. At that time Swami ji was asked! Tell me, how is your health now?' He said, 'It is good, today is a day of rest after one month. 'Lala Jiwan Das Asked 'Maharaj! Where are you present? Swamiji replied 'In God's will.'

At that time, there did not seem to be any kind of grief or nervousness on the face of Shriyut. He used to bear misery with such bravery that no lamentation or sorrow ever came out of his mouth. Similarly, it was five o'clock while talking to Swami ji, and he remained very careful. At this time we asked Mr. Yut, "Tell me, how is your health now?" were conversing. When the time came for half past five, Swamiji said to us, 'Now call all the Aryans who have come from distant countries and make them behind me. There should be no person infeel. Just the order obayed what was done.

When everyone came to Swami ji, he asked to open all the four doors and also got two small doors on the top roof opened. At this time Pandit Vishnulal Mohanlal also came as per the order of Mr. Udaipuradhish. Then Swami ji asked about day, date and attack? Someone replied that the treaty of Krishna Paksha and Shukla Paksha is Amavas Tuesday. Hearing this, Swami ji looked at the ceiling and walls of the house, then first recited Veda-mantras, then did some worship of God in Sanskrit, then recited Gayatri Mantra with great joy and happiness after saying a little about God's qualities in the language. Started reciting after that, with joy and a cheerful mind, started saying for some time, O Merciful! O Almighty God! This is your wish. This is your wish. May your wish come true! Aha! You have done a good job!' Just saying this, Swamiji Maharaj, who was lying straight, turned himself and in a way stopped breathing and let it out only once.'

(Aryadharmendra life)

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

12वीं पास वंचित छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति
Pragati
भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों को आर्य समाज द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति के बारे में पूरी जानकारी (इंजीनियरिंग/मेडिकल/कानून/रक्षा आदि)
aryapragati.com
9311721172
आवेदन की अन्तिम तिथि 30 जून, 2025

पुरोहित चाहिए
आर्यसमाज तिलक नगर, नई दिल्ली के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो समस्त संस्कार तथा समाज के दैनिक और साप्ताहिक यज्ञ निपुणता के साथ सम्पन्न करा सके।
सम्पर्क करें - रणवीर दुआ, प्रधान
(9811683560)

प्रथम पृष्ठ का शेष

युवा शक्ति के सर्वांगीण विकास का स्वर्णिम अवसर, ग्रीष्मकालीन चरित्र निर्माण एवं .....

इसलिए आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल के शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त करके युवा शक्ति अपने वास्तविक स्वरूप से परिचित होती है, उनकी आदर्श दिनचर्या और खान-पान के साथ-साथ उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्यायाम, आसन, प्राणायाम की शिक्षाओं की प्राप्ति तथा बौद्धिक कक्षाओं से आत्मबल की वृद्धि से सर्वांगीण विकास संभव होता है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल तथा प्रांतीय स्तरों पर ग्रीष्मकालीन शिविरों का बिगुल बज चुका है। इन सभी शिविरों में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के माननीय अध्यक्ष स्वामी देवव्रत जी से प्रशिक्षण प्राप्त सुयोग्य शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा आर्य वीरों, वीरांगनाओं को चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। आर्य परिवारों के बच्चों के लिए यह एक स्वर्णिम अवसर है। अत: अपने बच्चों के प्रति जो आपका मोह है उसे त्यागकर, उनके उज्जवल भविष्य के लिए आवासीय शिविरों में भेजने का प्रयास अवश्य ही करें। क्योंकि आधुनिक परिवेश में किशोर, युवा और बच्चों को जो विपरीत वातावरण प्राप्त हो रहा है, मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से जो कुछ वें सीख रहे हैं उसके विषय में तो कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इस विषय में तो आप सब जानते हैं। लेकिन हमें अपने बच्चों को छुई-मुई का ऐसा पौधा नहीं बनाना चाहिए, कि कोई उंगली दिखाए और वे मुरझा जाएं, हमें तो उन्हें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक रूप से इतना मजबूत बनाना चाहिए कि वे हर हाल में, हर स्थिति में मजबूत मनोबल के साथ सफलता का परचम लहरा सकें। जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकें।

मौसम चाहे कोई भी हो हर मौसम की सुबह सुहानी होती है। सुबह दिवस का बचपन होता है, जिस व्यक्ति का बचपन स्वस्थ और तरोताजा होता है उसका पूरा दिन सफल होता ही होता है। अगर किसी की सुबह ही आलस्य से भरी हुई हो, उदासी से भरपूर हो तो फिर उसका पूरा दिन चिंता में बीत जाता है। इसलिए आर्य वीर दल और वीरांगना दल के शिविर में बच्चों को सुबह जल्दी उठकर, योगासन, व्यायाम, प्राणायाम, लाठी, भाला, तलवार, जूडो-कराटे, स्तूप, मलखम, कदमताल इत्यादि की शिक्षा देकर अभ्यास कराया जाता है। इसके उपरांत संध्या, हवन करना-कराना भी सिखाया जाता है।

प्रात: नाश्ते से लेकर दोपहर का भोजन, रात्रि का भोजन, दूध, फल इत्यादि सभी चीजों का पूरा ध्यान रखा जाता है। भोजन के स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थ्य वर्धक भी हो इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। सभी बच्चे जब सुबह शाम सुयोग्य अनुभव प्राप्त शिक्षकों के निर्देशन में व्यायाम प्राणायाम करते हैं तो उन्हें पर्याप्त भूख भी लगती है और वे रुचि पूर्वक भोजन करते हैं और स्वस्थ रहते हैं।

आजकल हमारे बच्चे क्या सीख रहे हैं और हम उन्हें क्या सिखा रहे हैं, यह हमें अवश्य सोचना विचारना चाहिए। जिन खेतों में बीज नहीं बोए जाते वहां खरपतवार तथा झाड़-झंखाड उग ही जाते हैं। अत: शिविर में बच्चों को ऐसे शिक्षाप्रद संस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिनसे उन्हें जीवन भर संपोषण प्राप्त होता है। और वे सभी शिक्षाएं, संस्कार बच्चों को खेल-खेल में सिखाए जाते हैं। वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, विशेषज्ञों द्वारा दिए गए संस्कार बच्चों को महान धरोहर के रूप में प्राप्त होते हैं, जो उनके जीवन भर काम आते हैं। शिविर में भाग लेने वाले बच्चे मातृ-पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, राष्ट्र भक्त बनकर अपना, अपने माता-पिता का और देश का नाम रोशन करते हैं।

10 या 8 दिनों के शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर शिविरार्थी जिस समय समापन समारोह में व्यायाम प्रदर्शन में सहभागी बनते हैं तो उनका उमंग, उत्साह से चमकता चेहरा देखने-दिखाने लायक होता है। बैंड बाजों और संगीत को धुन पर करतब दिखाते आर्य वीर, वीरांगनाओं संतुलित व्यक्तित्व एक अनोखा आदर्श प्रस्तुत करता है। उस समय आर्य वीर, वीरांगनाओं के माता-पिता और उपस्थित जनसमूह रोमांचित होकर उन्हें आशीर्वाद देता है। वे पल बड़े भावुक और मनोहारी होते हैं। अत: सार्वदेशिक और प्रांतीय आर्यवीर दल एवं वीरांगना दल के शिविरों में अपने बच्चों को भेजें और उद्घाटन और समापन समारोह में अवश्य पधारें। इस अवसर पर शिविर के लिए तन, मन, धन से सहयोग भी अवश्य प्रदान करें।

- आचार्य अनिल शास्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

देश में अभी और कितने छिपे हैं ...

इसी दानिश को ऑपरेशन सिंदूर के बाद अवांछित व्यक्ति घोषित किया गया था। इसी दानिश के साथ ज्योति मल्होत्रा के मधुर संबंध बताए जा रहे हैं। क्योंकि ज्योति पिछले साल 23 मार्च को पाकिस्तान के नेशनल डे पर वहां की एंबेसी में इफ्तार पार्टी में शामिल हुई थी। एंबेसी में पाकिस्तानी दूतावास के एक अफसर दानिश ने बहुत फ्रेंडली तरीके से उसका वेलकम किया। वीडियो में दोनों आपस में इस तरह से बात करते दिखे जैसे एक-दूसरे को बहुत करीब से जानते हों। पार्टी में दानिश ने उसे अपनी पत्नी से मिलवाया। इसके अलावा वहां मौजूद अधिकारियों से भी उसकी बात कराई।

इस इफ्तार में ज्योति कुछ चीनी अधिकारियों से भी मिली। वह पूरे वीडियो में पाकिस्तानी एंबेसी में किए इंतजामों की जमकर तारीफ करती रही। उसने दानिश की पत्नी को अपने घर यानी हरियाणा - हिसार में आने के लिए इनवाइट भी किया। अब सवाल ये भी हो सकता है कि आखिर दानिश को ज्योति कैसे मिली। हालाँकि इसके पीछे की कहानी अभी साफ नहीं है लेकिन मीडिया रिपोर्ट की माने तो दानिश ऐसी लड़कियों और महिलाओं को अपना शिकार बनाता था।

पाकिस्तान में ननकाना साहिब गुरुद्वारा है, भारत से हर रोज श्रद्धालुओं के काफी जत्थे यहां जाते हैं। ननकाना साहिब गुरुद्वारे में जाने के लिए इन श्रद्धालुओं को पाकिस्तानी दूतावास से वीजा लेना पड़ता है। बताया जा रहा है कि ज्योति पाकिस्तान की यात्रा के लिए पाकिस्तानी दूतावास में गई तो यहीं उसकी दानिश से मुलाकात हुई, फोन नंबर की अदला-बदली हुई, दोनों की एक-दूसरे से खूब गहरी बातें हुईं। इसके बाद ज्योति और दानिश करीब आए। दानिश के जरिए ही ज्योति का संपर्क पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के अन्य एजेंटों से हुआ, जिनमें अली अहसान और शाकिर उर्फ राणा शहबाज शामिल हैं।

ना केवल ज्योति, कुछ मीडिया रिपोर्ट्स ने ये भी बताया कि दानिश को अपना शिकार दूतावास में ही मिल जाता था। ऐसे पंजाब के मलेरकोटला की रहने वाली 32 साल की विधवा महिला गजाला 27 फरवरी 2025 को पाकिस्तान का वीजा बनवाने के लिए नई दिल्ली स्थित पाकिस्तान उच्चायोग पहुंची थी। वहीं उसकी मुलाकात दानिश से हुई। गजाला ने दानिश के साथ कुछ निजी जानकारी साझा की और जल्दी ही दोनों की दोस्ती हो गई। दोनों की बात पहले व्हाट्सएप पर होती थी, लेकिन फिर दानिश ने बातचीत के दौरान गजाला से नजदीकियां बढ़ाईं, वीडियो कॉल पर बातचीत की और उसे शादी का झांसा भी दिया। धीरे-धीरे दानिश ने उसे पैसों का लालच देना शुरू कर दिया। 7 मार्च को उसने फोनपे से 10,000 रुपये और 23 मार्च को गूगलपे से 20,000 रुपये भेजे। 23 अप्रैल को गजाला अपनी दोस्त बानू नसरीना के साथ दोबारा पाकिस्तान उच्चायोग गई। बानू भी मलेरकोटला की एक विधवा है। दानिश ने फिर से दोनों के वीजा की व्यवस्था करवाई और अगले ही दिन वीजा जारी कर दिया गया। हालाँकि, ये दोनों भी अब सुरक्षा एजेंसियों की गिरफ्त में हैं। जिस तरह से पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वाले लोग मिल रहे हैं, उसे देखकर लग रहा है कि देश के अंदर अभी न जाने कितने गद्दार छिपे बैठे हैं। सरकार को चाहिए कि ऐसे एक-एक गद्दार को बिल से बाहर निकालकर वही सजा दे, जो मानसिंह को मारकर महाराणा प्रताप ने उसे उसकी गद्दारी की सजा दे दी थी।

- सम्पादक

आर्यसमाज द्वारा संचालित
सुशीलराज आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के अन्तर्गत
संघ लोक सेवा आयोग की
सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा
रजिस्ट्रेशन शुल्क 100 रुपए मात्र/-
प्रमुख सुविधाएं
मार्गदर्शन
रहना
शिक्षण
खाना

इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें ।
वेबसाइट : www.pratibhavikas.org
आवेदन की अंतिम तिथि - 30 जून 2025
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

शोक समाचार

श्री अशोक गुप्ता जी को पुत्रशोक

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन, दिल्ली के अधिकारी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अशोक कुमार गुप्ता जी के सुपुत्र श्री अक्षय कुमार गुप्ता जी का अल्पायु में दिनांक 15 मई, 2025 को अमेरिका में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पंजाबी बाग शमशान घाट में 21 मई, 2025 को हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

⑧ साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 19 मई, 2025 से रविवार 25 मई, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 22-23-24/05/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 मई, 2025

लो, फिर आया युवा चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविरों का मौसम

आर्यजन अपने बच्चों को शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक विकास के लिए शिविरों में भेजें

आर्य विद्यालयों के अधिकारी भी शिविरों में भाग लेने हेतु विद्यार्थियों को करें प्रेरित

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्य वीर दल
राष्ट्रीय शिविर
1 जून से 15 जून, 2025
स्थान : गुरुकुल विश्वभारती, भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)
उद्घाटन : 2 जून - सायं 5 बजे
समापन : 15 जून - सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- *सत्यवीर आर्य प्रधान संचालक, 9414789461*

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर
16 से 25 जून, 2025
स्थान : श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)
सम्पर्क करें- *सुश्री नर्मदा आर्या 8221881203*

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर
7 जून से 15 जून, 2025
स्थान : जनता इंटर कॉलेज, पलड़ी, बागपत (उत्तर प्रदेश)
सम्पर्क करें- *श्रीमती मृदुला चौहान संचालिका, 9810702760*

प्रमुख चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविरों का विवरण

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश
चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर
22 मई से 1 जून, 2025
स्थान : डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल पुष्पांजलि एन्कलेव, पीतमपुरा दिल्ली
उद्घाटन : 24 मई - सायं 5:30 बजे
समापन : 1 जून - सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- *बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164*

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश
विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर
समापन समारोह
दिनांक 25 मई- सायं 4:30 बजे
स्थान : रघुमल आर्य कन्या विद्यालय राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली
सम्पर्क करें- श्रीमती विभा आर्या मन्त्राणी, 9873054398

आर्य युवा संस्कार शिविर, पंचकुला
(10 से 17 वर्ष के बच्चों हेतु)
5 से 12 जून, 2025
स्थान सीमित (30 सीट)
अभिभावक स्पेशल शिविर
9-10 जून, 2025

आर्य युवती संस्कार शिविर, पंचकुला
(10 से 17 वर्ष की बालिकाओं हेतु)
11 से 17 जून, 2025
स्थान सीमित (35 सीट मात्र)
अभिभावक स्पेशल शिविर
15-16 जून, 2025

दोनों संस्कार शिविरों में भाग लेने अथवा शिविर सम्बंधी अधिक जानकारी के के लिए 7428894033 पर सम्पर्क करें। - **सार्वदेशिक विश्वमार्यम ट्रस्ट**

बन्धुओं, वर्तमान समय अत्यन्त चुनौतियों से भरा है। अत: अपनी वास्तविक सम्पत्ति सन्तानों को शारीरिक, आत्मिक एवं बौद्धिक स्तर पर संस्कृति और संस्कारों से समुन्नत करने हेतु शिविरों का यह मौसम हर वर्ष आता है। इसलिए बिना समय गवाएं अपने बच्चों को अपने निकटवर्ती शिविरों में अवश्य भेजें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
42वां वैचारिक क्रान्ति शिविर
23 मई से 31 मई, 2025
आर्यसमाज रानीबाग मेन बाजार दिल्ली
उद्घाटन : 23 मई,2025 सायं 6 बजे
संकल्प दिवस : 25 मई, 2025
समापन : 31 मई, 2025 सायं 4 बजे
स्थान : डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर, जनपथ, नई दिल्ली
सम्पर्क करें- *जोगेन्द्र खट्टर महामन्त्री, 9810040982*

अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर
23 मई से 1 जून, 2025
स्थान : आर्यसमाज मेन बाजार रानी बाग, दिल्ली-110034
अधिक जानकारी के लिए 9311721172 से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह